International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 168-169

रामायण में दान की महिमा

डॉ0 अशोक कुमार दुबे

एसोशिएट प्रोफेसर संस्कृत–विभाग, बी0एस0एन0बी0 पी0जी0 कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

भारत की प्राचीन धार्मिक मान्यताओं में दान का अत्यन्त महत्त्व रहा है। धार्मिक ग्रन्थों में व्यक्ति के लिए सामर्थ्यानुसार दान देने की बात कहीं गयी है। ऋग्वेद् में कहा गया है–जो न तो धर्मात्मा व्यक्तियों को देता है, न मित्र को देता है, वह केवल अकेला भोजन करने वाला केवल पाप को ही खाता है। ऐसा मूर्ख व्यर्थ ही अन्न प्राप्त करता है। सच कहता है कि वह अन्न नहीं, वह तो उसकी मृत्यु है।[1] तैत्तिरीय उपनिषद् में भी श्रद्धापूर्वक दान देने पर बल दिया गया है–"श्रद्धा से देना चाहिए, अश्रद्धा से नहीं देना चाहिए, आर्थिक सामर्थ्यानुसार देना चाहिए, लज्जा से देना चाहिए, भय से देना चाहिए और पात्र–अपात्र का विवेक करके देना चाहिए।"[2] भगवान श्री कृष्ण ने गीता में सात्विक, राजसिक[3] एवं तामसिक[4] तीन प्रकार के दानों का प्रतिपादन किया है। दान देना ही चाहिए–ऐसा मानकर जो दान प्रत्युपकार न करने वाले सुपात्र को उचित स्थल ओर उचित समय में दिया जाता है वही दान सात्विक कहलाता है।[5] महाकवि अश्वघोष ने लिखा है कि दान अमरत्व का कारण है, सुख का क्षेत्र है, हर्ष की निधि है और चित्त के निग्रह का कारण है।[6] इस प्रकार अनेक ग्रन्थों में दान की महत्ता एवं अनिवार्यता का प्रतिपादन किया गया है। महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण का मूलाधार ही धार्मिक मान्यताओं की स्थापना करना था। अतः दान की महिमा उन्होंने भी मुक्त स्वर से गायी है। यज्ञ के अवसर पर वसिष्ठ मुनि दान की पवित्रता की ओर संकेत करते हुए कहते हैं– हे भद्रपुरुषों! किसी को कुछ देना हो उसे अवहेलना के साथ नहीं देना चाहिए क्योंकि अनादर पूर्वक किया गया दान दाता को नष्ट कर देता है। इसमें कोई संशय नहीं है।[7]

मूल शब्दः रामायण, धार्मिक ग्रन्थ।

प्रस्तावना

वाल्मीकि रामायण में अनेक स्थलों पर दानशीलता का चित्रण करते हुए महर्षि ने दान की अनिवार्यता की ओर स्पष्ट संकेत किया है। यज्ञ के अवसर पर महाराज दशरथ ने वेदों में पारगंत विद्वानों को दस लाख गौएं, दस करोड़ सुवर्ण की मुद्राएं और चालीस करोड़ रजत मुद्राएं दान में दी थी।[8] यही नहीं उन्होंने एकाग्र चित्त से अभ्यागत ब्राह्मणों को एक करोड़ सुवर्ण की मुद्राएं बांटी थीं।[9] सारा धन दान करने के उपरान्त जब एक दरिद्र ब्रहमण ने उनसे धन की याचना की तो दान शिरोमणि महाराज दशरथ ने उसे अपने हाथ का उत्तम आभूषण उताकर कर दे दिया[10] धन के अभाव में हस्ताभूषण को उतारकर दीन ब्राहमण को दान देने का चित्रण करके महर्षि ने दान की अनिवार्यता की व्यंजना की है। महाराज दशरथ ने अनेक पुत्रों के मंगल के लिए नान्दीश्राद्ध का आयोजन करके ब्राह्मणों को असंख्य गायें दान में दे दी थीं।[11] इन सब के सींग सोने से मढ़े हुए थे। इन सबके साथ बछड़े और कांसे के दुग्ध–पात्र थे।[12] रामायण में अनेक स्थलों पर माता–पिता अपनी सन्तान की मंगलकामना से स्वस्तिवाचन की व्यवस्था करके दक्षिणा के रूप में ब्राह्मणों को दान देते हुए प्रदर्शित किये गये हैं। श्रीराम के वनगमन के समय ब्राह्मण से स्वस्ति–वाचन करा कर उन्हें इच्छानुकूल दक्षिणा प्रदान की थी।[13] वन–गमन के समय श्री राम ने सीता के आग्रह पर उन्हें साथ चलने की आज्ञा प्रदान कर श्री राम ने सीता को ब्राह्मणों के लिए विविध प्रकार की वस्तुओं को दान देने का आदेश देते हुए कहा था–हे सीते! ब्राह्मणों को रत्न स्वरूप उत्तम वस्तुएं दान करो और भोजन मांगने वाले भिक्षुकों को भोजन दो।[14] तुम्हारे पास जितने बहुमूल्य आभूषण हो जो–जो अच्छे वस्त्र हों और कोई भी रमणीय पदार्थ हों तथा मनोरंजन की जो–जो सुन्दर सामग्रियां हों, मेरे और तुम्हारे उपयोग मे आने वाली जो उत्तमोत्तम शैय्याएं, सवारियां तथा अन्य वस्तुएं हों उनमें से ब्राह्मणों का दान करने के पश्चात् जो बचें उन सबको अपने सेवकों में बाँट दो।[15] दान की पात्रता का ध्यान रखते हुए महर्षि वाल्मीकि ने राम द्वारा लक्ष्मण से दान के विषय में इस प्रकार कहलवाया है–हे लक्ष्मण! यजुर्वेदीय, तैत्तिरीय शाखा का अध्ययन करने वाले ब्राह्मणों के जो आचार्य और सम्पूर्ण वेदों के विद्वान हैं, साथ ही जिनमे दान की प्राप्ति की योग्यता है तथा जो माता कौशल्या के प्रति भक्ति भाव रखकर प्रतिदिन उन्हें आशीर्वाद प्रदान करते हैं उनको सवारी, दाास दासी, रेशमी वस्त्र और जितने धन से वे ब्राह्मण देवता सन्तुष्ट हों, उतना धन खजाने से दिलवाओ।[16] यहीं नहीं, श्री राम लक्ष्मण से यथोचित बहुमूल्य रत्न, वस्त्र, गौएं, अन्न, ऊँट, बैल आदि दान करने का आदेश देते हैं।[17] वनमार्ग में गंगा से राम के मंगल की प्रार्थना करते हुए सीता ने कहा था–हे गंगे! मैं आपका प्रिय करने की इच्छा से ब्राह्मणों को एक लाख गौएं बहुत से वस्त्र तथा उत्तमोत्तम अन्न प्रदान करूँगी।[18]

निष्कर्ष–

इस प्रकार हम देखते है कि दान देने वाला व्यक्ति महर्षि वाल्मीकि की दृष्टि में अत्यन्त पवित्र माना गया है। यही कारण है कि भरत कौशल्या के समक्ष अपने को निर्दोष सिद्ध करते हुए यह कहते हैं कि जिसकी सलाह से श्री राम को वन में जाना पड़ा हो उसका मन कभी धर्म मे न लगे और वह अपात्र को धन दान करें।[19] भरत के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि संसार में कुपात्र को दान देने वाला व्यक्ति अत्यन्त निन्दनीय होता है। पिता के श्राद्ध के समय भरत द्वारा विविध प्रकार की वस्तुएँ दान कराकर महर्षि ने दान की विविध रूप में उच्च स्वर से घोषणा की है।[20] इस प्रकार वाल्मीकि रामायण

में बड़े विस्तार से दान की अनिवार्यता, उपयोगिता का प्रतिपादन हुआ है। साथ ही साथ दान करने योग्य व्यक्ति की पात्रता पर भी विशेष बल दिया गया है।

सन्दर्भ एवं ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद–10/117/6
   मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत से तस्य।
   नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवत्नादी।।
2. तैत्तरीय उपनिषद–1/11
   श्रद्धयां देयं अश्रद्धयादेयं देयम्। हिया देयं भिया देयं संविदा देयम्।।
3. गीता–17/21
   यतुः प्रत्युपकारर्थफलमुच्छिश्य वपुनः।
   दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्।।
4. गीता–17/22
   आदेशकाले यज्ञानमपात्रेभ्यश्च दीयते।
5. गीता–17/20
6. अश्वघोष–बुद्धचरितम्–18/68
   अमृतत्वस्य हेतुस्तच्छानं क्षेत्र सुखस्य च।
   प्रमोदस्य निधिश्चितरोधस्य करणं स्मृतम्।।
7. वाल्मीकि रामायण–बालकाण्ड–13/33–1/2
   ततः प्रीतो द्विजश्रेष्ठस्तान। सर्वान् मुनिरब्रवीत्।
   अवज्ञया न दातव्यं कस्यचिल्तीलयापि वा।।
8. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड–14/50,51
   एवमुक्तो नरपति ब्रह्मिणेर्वेदपाररगगैः। गवां शतसहत्राणि दश तेभ्यो ददौ नृपः।।
   दशकोटि सुवर्णस्य रजतस्य चतुर्गुणम्। ऋत्विजसतु ततः सर्वे प्रददुः सहिता वसु।।
9. वही–14/53
   सुप्रीमनसः सर्वे प्रत्यूचुर्मुदिता भृशम्।
   ततः प्रसर्पकेभ्यस्तु हिरण्यं सुसमाहितः।।
10. *जाम्बूनंद कोटिसंख्यं ब्राह्मणेभ्यो ददौ तदा।*
    दरिद्राय द्विजायाथ हसताभ्रणमुत्तमम्।।
11. वहीं–72/22
    गवां शतसहसं च ब्राह्मणेभ्यो नराधिपः। एकैकशो ददौ राजा पुत्रानुछिश्य धर्मतः।।
12. वही–72/23
    सुवर्णशृङ्ग्यसम्पन्ना चत्वारपुरुषर्षभः।।
13. वाल्मीकि रामायण–अयोध्या काण्ड–25/31
    ततस्तस्मै द्विजेन्द्राय राममातायशस्विनी। दक्षिणां प्रददौ काम्यां राघवं चेदमब्रवीत्।।?
14. वही–30/43
    ब्राह्मणेभ्यश्च रत्नानि भिक्षुकेभ्यश्च भोजनम्। देहि चाशंसमानेभ्यः सत्वरस्व च मा चिरम्।।
15. वही–30/44,45,
    भूषणानि महार्हाणि वरवस्त्राणि यानि च। रमणीयाश्च ये केचित् क्रीगर्धाश्चाप्युस्कराः।।
    देहि स्वभृत्यवर्गस्य ब्राह्मणानामनन्तरम्।।
16. वाल्मीकि रामायण–अयोध्या काण्ड–32/15,16
    कौशल्यां य च आशीर्भिर्भक्तः पर्युपतिष्ठति। आचार्यस्तैतिरीयाणा भिरुपश्च वेदवित्।।
    तस्य यानं च दासीश्च सौमित्रे सम्प्रदापय। कौशेयानि च वस्त्राणि यावत् तुष्यति स द्विजः।।
17. वही–32/17 से 21 तक
18. वही–52/88
    गवां शतसहस्त्रं च वस्त्राण्यन्नं च पेशलम्। ब्राह्मणेभ्यः प्रदास्यामि तव प्रियचिकीषया।
19. वही 75/42
    मासय धर्म मनो भूयादधर्म स निवेषताम्। आपत्रवर्षी भवतु यस्यार्योहनुमते गतः।।
20. वाल्मीकिरामायण–अयोध्या काण्ड–देखिये 66 वाँ सर्ग।